(पृष्ठ-20 का शेष...)

घर में लाख रुपये के गहने लावे तो पूरे परिवार और पड़ोसी तक को दिखाने का उल्लास रहता है; फिर चैतन्यनिधान निजात्मा को देखने के लिये तेरा मन लालायित क्यों नहीं होता ? तुझे उल्लास कैसे नहीं आता ?

हे भाई ! अनंत ज्ञानादि गुणसम्पन्न आत्मा सिद्ध जैसा है। उसे अन्य किसी की उपमा नहीं दी जा सकती ह्न ऐसा अनुपमेय तत्त्व मैं ही हूँ। मैं स्वयं ही मेरी निजस्वरूप लक्ष्मी का स्वामी हूँ। मेरा स्व-स्वामी संबंध मुझसे ही है। मैं अनादि सत्तास्वरूप आत्मा हूँ। मेरी सत्ता से मैं सदा विराजमान हूँ। किसी दूसरे की सत्ता से मैं नहीं हूँ तथा मैं अपने असंख्यप्रदेशों में ही विराजमान रहता हूँ।

इसप्रकार विकल्पात्मक निर्णय करने के पश्चात् धर्मी जीव इन विकल्पों को भी छोड़कर निर्विकल्प होता है; फिर वह ऐसा कोई विकल्प नहीं करता।

अतीन्द्रिय ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मा की जिसे रुचि जागृत हुई है, उस धर्मी को निर्विकल्प अनुभव में विकल्प उत्पन्न नहीं होते और यदि विकल्प उठे तो उसमें एकाग्रता नहीं होती। निज आत्मा में एकाग्रता के बिना निर्जरा नहीं होती। विकल्प का उत्थान होना बंध का कारण है और भगवान आत्मा अबंध स्वभावी है। राग संसार का बीज है और भगवान आत्मा मोक्ष का बीज है, उसमें एकाग्र होते ही मोक्ष होता है।

अकषायस्वरूप वीतरागबिम्ब भगवान आत्मा में एकाग्रता करते ही परम समरसीभावस्वरूप वीतरागीपर्याय प्रगट होती है ह्न ऐसी समरसी पर्याय को प्राप्त योगी शरीर का लक्ष नहीं करता। उसे शरीर की चिंता अथवा परवाह नहीं होती। पहले भी समकिती को शरीर की चिन्ता नहीं थी; किन्तु कमजोरीवश शरीर को ठीक रखने का विकल्प अवश्य आता था; अब निर्विकल्प अनुभव में यह विकल्प भी नहीं उठता। **(क्रमशः)**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 25 288 अंक : 12

प्रवचनसार कलश पद्यानुवाद

(दोहा)

चरण द्रव्य अनुसार हो द्रव्य चरण अनुसार।
शिवपथगामी बनो तुम दोनों के अनुसार।।१२।।
द्रव्यसिद्धि से चरण अर चरण सिद्धि से द्रव्य।
यह लखकर सब आचरो द्रव्यों से अविरुद्ध।।१३।।
जो कहने के योग्य है कहा गया वह सब्ब।
इतने से ही चेत लो अति से क्या है अब्ब।।१४।।

(मनहरण कवित्त)

उतसर्ग और अपवाद के विभेद द्वारा।
भिन्न-भिन्न भूमिका में व्याप्त जो चरित्र है।।
पुराण पुरुषों के द्वारा सादर हैं सेवित जो।
उन्हें प्राप्त कर संत हुये जो पवित्र हैं।।
चित्सामान्य और चैतन्यविशेष रूप।
जिसका प्रकाश ऐसे निज आत्म द्रव्य में।।
क्रमशः पर से पूर्णतः निवृत्ति करके।
सभी ओर से सदा वास करो निज में।।१५।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

चैतन्य तत्त्व की अद्भुत महिमा

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 42 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

किमिदं कीदृशं कस्य कस्मात्क्वेत्यविशेषयन्।
स्वदेहमपि नाऽवैति योगी योगपरायणः ।।42।।

योग परायण (ध्यान में लीन) योगी यह क्या है ? कैसा है ? किसका है ? क्यों है ? कहाँ है ? इत्यादि भेदरूप विकल्प नहीं करता हुआ अपने शरीर को भी नहीं जानता। (अर्थात् उसको अपने शरीर का भी ख्याल नहीं रहता।)

(गतांक से आगे ..)

निर्विकल्प शुद्ध आनन्दकन्द आत्मा का प्रेम छोड़कर जो शुभराग में प्रेम करता है, उसने निजात्मा का खून किया है, अपनी आत्मदशा का हनन किया है। परद्रव्य को कोई मार नहीं सकता, परद्रव्य की कोई रक्षा भी नहीं कर सकता और न ही परद्रव्य की दया ही पाल सकता है; किन्तु निज चैतन्यप्राण का घात हो रहा हो तो उसकी रक्षा कर सकता है, स्वदया का पालन कर सकता है और यही एकमात्र करनेयोग्य कार्य है।

अरे भाई ! जो जीव अपने पूर्णानन्दस्वरूप का अनादर करके शुभराग की क्रिया में धर्म मानता है, वह वास्तव में मिथ्यात्व का पोषण करता है। शुभभावों में धर्म अथवा सुख नहीं है, वहाँ तो एकान्त दुःख ही है। शुभभाव तो जहर है और उससे पार निर्विकल्प चैतन्य का अनुभव धर्म है। यह धर्म चौथे गुणस्थान से ही प्रगट हो जाता है।

अहो ! यह तो निजात्मा के हित का काल आ गया है। यह काल भव का अभाव करने के लिये है, इससे विपरीत यदि कोई भव का भाव करे तो वह वास्तव में अपना महान अहित करता है। हमें हमारे जीवन में निरन्तर इस महान तत्त्व की चर्चा करके निर्णय करने की आवश्यकता है।

देखो भाई ! यह परम सत्य का उपदेश है। जिन्हें निजात्मा का प्रचुर स्व-

संवेदन वर्त रहा है और जो छठवें-सातवें गुणस्थान में निरन्तर झूल रहे हैं, वे मुनिराज उक्त उपदेश दे रहे हैं।

आत्मा में कितनी ताकत है ? केवलज्ञानरूप शक्ति की बात तो दूर; किन्तु यदि मतिज्ञान की शक्ति की बात भी करें तो उसमें भी अत्यन्त शक्ति विद्यमान है। जातिस्मरण ज्ञान मतिज्ञान की धारणा का ही विषय है।

राजा श्रेयांस को जातिस्मरण हुआ कि आठ भव पूर्व मैं ऋषभदेव के जीव की श्रीमती नामक रानी था। उससमय तत्कालीन समस्त परिस्थितियों का भी उसे ज्ञान हुआ। इसमें किसीप्रकार की शंका को कोई स्थान नहीं है। जिसप्रकार केवलज्ञानी के ज्ञान में फेर-फार नहीं होता, उसीप्रकार परोक्ष मतिज्ञान की धारणा में आये हुये जातिस्मरण ज्ञान में भी फेर-फार नहीं होता।

भगवान को देखते ही राजा श्रेयांस को इतना उल्लास आया कि उन्हें जातिस्मरण हो गया। वर्तमान में आठ भव पूर्व का शरीर विद्यमान नहीं है; तथापि देखनेमात्र से ही यह बात ख्याल में आ गई कि आठ भव पूर्व यह जीव मेरा पति था। पश्चात् आहारदान की विधि भी ख्याल में आई और विधिपूर्वक आहारदान दिया गया।

हे भाई ! यहाँ यह कहना चाहते हैं कि बाहर के भगवान देखने पर भव की जाति का ज्ञान हो गया तो आत्मभगवान को देखने पर आत्मजाति का अनुभव क्यों नहीं होगा ? अर्थात् निश्चित ही आत्मजाति का ज्ञान होगा। एकबार आत्मा का ज्ञान होगा तो शरीर का लक्ष हमेशा के लिये छूट जायेगा।

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सब कुछ पलट जाने पर माने करोड़ों-अरबों वर्ष बीत जाने पर भी परोक्षरूप मतिज्ञान का इतना विकास है कि पूर्व की समस्त बातों को निशंकरूप से जान लेता है; जब मतिज्ञान की ही इतनी महिमा है तो फिर केवलज्ञान की अचिन्त्य महिमा का क्या कहना ? तथा ऐसा केवलज्ञान जिस आत्मा में से उत्पन्न होता है, उस आत्मा कितनी महिमा होगी ? ऐसे महिमावान, अनन्त गुणों के पिण्ड निज आत्मा को देखने का तुझे मन नहीं होता तो यह तेरी मूर्खता है।

(शेष पृष्ठ – 4 पर ..)

नियमसार प्रवचन

आत्मा किसका कर्त्ता-भोक्ता है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 19 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

दव्वत्थिएण जीवा वदिरित्ता पुव्वभणिदपज्जाया।
पज्जयणएण जीवा संजुत्ता होंति दुविहेहिं ॥

द्रव्यार्थिकनय से जीव पूर्वकथित पर्याय से व्यतिरिक्त है; पर्यायार्थिकनय से जीव उस पर्याय से संयुक्त है। इसप्रकार जीव दोनों नयों से संयुक्त है।

(गतांक से आगे)

अरिहन्त के अंसख्य प्रदेशों का आकार समय-समय पलटे; तथापि सर्वज्ञदशा भी टिकी रहे; यह बात सर्वज्ञ के अतिरिक्त अन्य शासन में हो ही नहीं सकती। व्यंजन पर्याय माने आत्मा का आकार और उसके भी दो प्रकार स्वभाव और विभाव। तथा उनमें प्रतिसमय उत्पाद-व्ययरूप परिणाम। ये बातें सर्वज्ञ के अलावा दूसरा नहीं जान सकता। **'सव्वे सुद्धा हु सुद्धणया'** ह्न ऐसा शास्त्र वचन होने से प्रत्येक जीव शुद्ध है। अत: शुद्धदृष्टि से विभाव व्यंजन पर्याय है ही नहीं।

विभाव व्यंजन पर्यायार्थिकनय से तो सर्व जीव पूर्वोक्त व्यंजन पर्यायों से संयुक्त हैं। उसमें अपवाद इतना है कि 'सिद्ध जीवों के अर्थपर्यायों सहित परिणति है, परन्तु व्यंजनपर्यायों सहित परिणति नहीं है'। यहाँ सिद्ध जीवों के व्यंजनपर्यायें गिनी ही नहीं। यद्यपि उनमें स्वभाव व्यंजनपर्यायें तो हैं; परन्तु उनको स्वभाव अर्थपर्यायों में ही गिना हैं; क्योंकि यहाँ विभाव व्यंजनपर्यायों की ही बात लेनी हैं और सिद्धों के विभाव व्यंजनपर्यायों का अभाव कहा है।

सर्वज्ञ का उपदेश दो नयों वाला है ह्न

(१) त्रिकाल शुद्ध आत्मा को देखने वाला द्रव्यार्थिकनय और (२) क्षणिक

विकारी व्यंजन पर्याय को देखने वाला पर्यायार्थिकनय ।

आत्मा के असंख्य प्रदेश हैं, उन सब की आकृति भी होती है और उनमें प्रत्येक क्षण विभाव व्यंजन पर्याय भी होती है, वह पर्यायनय का विषय है। वस्तुस्वरूप की दृष्टि से देखने पर आत्मा में विकारी व्यंजन पर्याय नहीं है। यदि कोई वर्तमान विकारी आकृति जितना ही पदार्थ माने और त्रिकाल शुद्ध चैतन्य को न माने तो वह एकान्त व्यवहारमूढ़ मिथ्यादृष्टि है। इसके विपरीत त्रिकाल शुद्ध आत्मा को तो माने और वर्तमान विकारी आकृति को न माने तो वह भी एकान्तवादी मिथ्यादृष्टि ही है।

चैतन्य की पर्याय में जड़ की पर्याय का तो अत्यन्त अभाव है। पर्याय में विकार होता है, पर वह भी एकसमय का ही विकारी अंश है; अत: वह भी पर्यायनय का विषय है; परन्तु यहाँ तो मात्र विभाव व्यंजन पर्याय की बात ली है।

विकारी व्यंजन पर्याय सिद्धों में नहीं है। उनमें तो असंख्य प्रदेशी अनन्तगुणों के पिण्ड की निर्विकारी परिणति ही हो रही है; इसलिए उनमें विकारी व्यंजन पर्याय नहीं कही गई; स्वभाव व्यंजन पर्याय तो उनमें है ही। सिद्धों में सादि-अनन्त सदृश आकृतिरूप परिणमन है; किन्तु विभाव व्यंजन पर्याय नहीं है।

सूत्र में तो ऐसा कहा है कि सर्व जीवों के दो नय हैं अर्थात् विभाव व्यंजन पर्याय भी सब के है। इसके आधार पर निम्न प्रश्न उपस्थित होता है ह्न

प्रश्न : सिद्धजीव सदा निरंजन है; अत: सभी जीव द्रव्यार्थिक तथा पर्यायार्थिक दोनों नयों से संयुक्त हैं अर्थात् सभी जीवों पर दोनों नय लागू होते हैं ह्न ऐसा सूत्रार्थ/ गाथार्थ व्यर्थ हो जाता है। यहाँ पर्यायनय का विषय विभाव व्यंजन पर्याय कहा, वह पर्याय सिद्धों में है नहीं, ऐसी स्थिति में सिद्ध भगवान को दोनों नय किस प्रकार लागू पड़ेंगे ? और यदि दोनों नय सिद्धों पर लागू नहीं होते तो फिर सूत्र का अर्थ ही व्यर्थ हो जाता है।

उत्तर : व्यर्थ नहीं होता; कारण कि निगम अर्थात् विकल्प; उसमें जो हो वह नैगम। जो भूत की पर्याय को वर्तमानवत् संकल्पित करे या कहे, भविष्यकाल की

पर्याय को वर्तमानवत् संकल्पित करे या कहे अथवा कथंचित् निष्पन्नतायुक्त और कथंचित् अनिष्पन्नतायुक्त वर्तमान पर्याय को सर्वनिष्पन्नवत् संकल्पित करे या कहे; उस ज्ञान को अथवा वचन को नैगम नय कहते हैं।

सिद्ध भगवान के अर्थपर्याय तथा व्यंजन पर्याय दोनों ही स्वाभाविक है। वर्तमान में उनके विभाव पर्याय नहीं है; किन्तु उस सिद्धात्मा के भी पहले विभाव व्यंजन पर्याय थी; अत: भूतनैगमनय से सिद्ध के भी पर्यायार्थिकनय लागू पड़ता है। पूर्व की विभाव व्यंजन पर्याय का आरोप करके सिद्ध के वर्तमान में विभाव व्यंजन पर्याय का आरोप करने में आता है।

सिद्धों का वर्तमान तो सर्व प्रकार से निर्मल ही है; परन्तु पहले उसमें अशुद्धता थी। वह जीव पहले अज्ञानदशा में विकार को अपना कर्तव्य मानता था, पश्चात् आत्मा का भान करके, उसमें एकाग्र होने पर उसे सिद्धदशा प्रगट हुई। अब वर्तमान में उसमें विभाव नहीं है; किन्तु फिर भी उसे पूर्व की विकारी व्यंजन पर्याय का भूतनैगमनय से कर्ता कहा जाता है। इसप्रकार सिद्ध के भी व्यवहार लागू पड़ता है। पूर्वकाल में वे भगवन्त संसारी थे, अशुद्ध थे, उदयभाववाले थे; इसलिए भूतनैगमनय से उन्हें अशुद्ध कहा जाता है।

अशुद्धता ही आत्मा का संसार है, वह कहीं बाहर नहीं है। पुण्य-पाप से मुझे लाभ होगा, शरीर की क्रिया मैं करता हूँ; ऐसी विपरीत मान्यता ही मिथ्यात्वरूप संसार है। जब मिथ्या मान्यता टले और चैतन्य का भान हो तो समझो उसका संसार नष्ट हो गया; पश्चात् जो अल्प राग-द्वेष रहता है, वह अस्थिरता है, अल्प संसार है; स्वरूप में लीनता द्वारा उसका भी नाश करके सिद्ध भगवान शुद्ध हुए हैं। उन्हें भी पूर्व की अशुद्धता का आरोप करके पर्यायनय से अशुद्ध कहा है। इसप्रकार द्रव्यार्थिकनय से सभी जीव शुद्ध हैं तथा पर्यायार्थिकनय से अशुद्ध हैं।

इसप्रकार सभी जीवों को दोनों नय लागू पड़ते हैं। उभयनय के बल से सर्व जीवराशि शुद्ध और अशुद्ध है। **(क्रमश:)**

छहढाला प्रवचन

रे जीव ! सुन, यह तेरे दुःख की कथा

कबहूँ आप भयो बलहीन सबलनि करि खायो अति दीन।
छेदन-भेदन-भूख-पियास भारवहन-हिम-आतप त्रास ।।७।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ...)

आत्मा स्वयं सुखस्वरूप है, उसका सुख संयोगों अथवा इन्द्रियविषयों के आधीन नहीं है ह्र यह बात रगड़-रगड़ कर प्रवचनसार में समझायी है। वहाँ केवली भगवान का अतीन्द्रिय सुख दिखाकर आत्मा का सुखस्वभाव सिद्ध किया है। सुखरूप या दुःखरूप स्वयं आत्मा परिणमता है, उसमें बाह्यपदार्थ कुछ नहीं करते।

अरे ! तुम स्वयं सुखस्वभाव से भरे हो; किन्तु उस सुखस्वभाव की तुम्हें खबर नहीं ह्र इस कारण दुःख को ही वेद रहे हो; परन्तु भाई ! जरा सोचो तो सही ! क्या दुःख वेदने का जीव का स्वभाव हो सकता है ?

नरक के कई जीवों को तीव्र दुःख की वेदना में ऐसा विचार जागृत हो जाता है कि अरे ! यह कैसा दुःख? यह कितना त्रास? आत्मा का स्वभाव ऐसा नहीं हो सकता; इसप्रकार विचार के द्वारा अन्तर में दुःखरहित शांतस्वभाव में प्रवेश करके वह आत्मा के अतीन्द्रियसुख का अनुभव कर लेता है।

देखो ! जीव जागे तो उसे कौन रोक सकता है? नरक का संयोग भी उसे बाधा नहीं कर सकता, वहाँ भी जीव आत्मज्ञान कर लेता है। इसलिये जब यह जीव अपना कल्याण करना चाहे तभी कर सकता है; वह इतना महान सामर्थ्यवाला है कि अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान कर सकता है। यदि ऐसी निजशक्ति को जीव सँभाले तो अनन्तकाल का अज्ञान एक ही क्षण में नष्ट होकर अपूर्व वीतराग-विज्ञान प्रगट हो जाये और बाद में उग्र धारा से शुद्धता की श्रेणी चढ़कर अन्तर्मुहूर्त में ही केवलज्ञान प्रगट हो। प्रत्येक आत्मा ऐसा पूर्ण स्वभाव-सामर्थ्यवाला है।

जीव स्वयं अपने को भूलकर मिथ्यात्व के कारण चार गति में जो दुःख भोग रहा है, उसका खयाल कराने के लिए यहाँ बाह्य के प्रतिकूल संयोग (छेदन-भेदन आदि) के द्वारा वर्णन किया है। उसके भीतर/अन्तरंग का दुःख किस प्रकार दिखाया जा सकता है ? बुद्धिगोचर दुःखों से भी अबुद्धिगोचर दुःख अनन्तगुणे हैं।

एकबार गाँव में देखा था कि पिंजरे में फँसे हुए चूहे के ऊपर एक लड़का क्रूरता से उबलते हुये पानी के छीटे मार रहा था। वह चूहा उस गर्म पानी के पड़ने से तड़फड़ाता था; परन्तु पिंजरे में फँसे हुये बेचारे कहाँ जाये? किसके पास पुकार करे? चीख-चीखकर मर जाते हैं।

एक जगह देखा क्रूर लोग सूअरनी के छोटे-छोटे बच्चों को चारों पैर बाँधकर भट्टों में पकाकर खा रहे थे। क्रूर लोग बैल, भैंसा आदि को असह्य त्रास देकर उनसे पचास-पचास मन का बोझ खिंचवाते हैं और फिर शक्तिहीन हो जाने पर उसे काटने के लिए कसाई के हाथ बेच देते हैं।

अज्ञानभाव में ऐसी क्रूरता अनन्तबार जीव ने की और खुद भी पशु होकर ऐसे दुःख अनन्तबार भोग चुका है। अरे ! वर्तमान में तो डॉक्टरी की पढ़ाई के बहाने से बन्दर, मेंढक आदि बेचारे प्राणियों को कितना सताते हैं? जीते जी उसका सिर काटकर दवा की आजमाइश करते हैं; जीते मेंढक के चारों पैरों में कीलें ठोककर उसका पेट चीरते हैं। अरे ! विद्या के नाम पर कितनी क्रूरता? यह तो सब अनार्यविद्या है। आर्यमानव में ऐसी क्रूरता नहीं हो सकती। यहाँ कहते हैं कि छेदन-भेदन या भूख-प्यास के ऐसे दुःख अनन्तबार जीव ने सहन किये; अतः अब ऐसा उपाय करना चाहिए कि फिर कभी ऐसे दुःख भोगना न पड़े, इन चतुर्गति के दुःखों से छूटकर आत्मा मोक्षसुख को प्राप्त करे।

योगसार में कहा है कि ह्र

चार गति दुःख से डरो, (तो) तज दो सब परभाव।
शुद्धातम चिन्तन करो, ले लो शिवसुख लाभ।।

कुत्ते के भव में घर-घर भटकते हुए भी पेट भर खाने को नहीं मिलता। कुत्ता

(शेष पृष्ठ – 30 पर ...)

देश भर में ग्रीष्मावकाश में सैंकड़ों स्थानों पर बाल संस्कार शिविरों की धूम

मध्यप्रदेश-उत्तर प्रदेश के 51 स्थानों पर ग्रुप शिविर ह्र

1. श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन-देवनगर (भिण्ड) के तत्त्वावधान में दिनांक 28 मई से 4 जून, 07 तक मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के भिण्ड, ग्वालियर, शिवपुरी, इटावा, मैनपुरी एवं फिरोजाबाद जिलों के 51 विभिन्न स्थानों पर एकसाथ बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

इन सभी स्थानों पर कुल मिलाकर लगभग 8,500 बालक-बालिकाओं तथा 4,000 मुमुक्षु भाई-बहनों ने शिविर का लाभ लिया। परीक्षा में 5,500 बालक-बालिकायें सम्मिलित हुये।

इस शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय जयपुर, आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन एवं अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा के कुल 128 विद्वानों ने शिक्षण कार्य किया।

शिविर बाल ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमारजी की प्रेरणा से एवं पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बाल ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड ने विविध स्थानों पर भ्रमण कर ज्ञान वर्षा की।

आयोजन में सर्वश्री सुनीलजी शास्त्री भिण्ड, महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, राजीवजी भिण्ड, शुद्धात्मजी शास्त्री मौ, आशीषजी शास्त्री भिण्ड, विकासजी शास्त्री मौ, नितुलजी शास्त्री भिण्ड, सौरभजी शास्त्री मौ का सराहनीय सहयोग रहा। **ह्र सुरेशचन्द जैन, भिण्ड**

विदर्भ के 32 स्थानों पर ग्रुप शिविर ह्र

2. श्री कुन्दकुन्द दिग. जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन नागपुर एवं के.के.पी.पी.एस. उज्जैन के सहयोग से स्व. श्रीमती मुलियाबाई छोटेलालजी मोदी की स्मृति में मोदी परिवार नागपुर द्वारा आयोजित दसवें बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन विदर्भ के 32 स्थानों पर दिनांक 3 से 10 जून,07 तक किया गया।

शिविर का उद्घाटन नागपुर में शनिवार 2 जून, 2007 को श्री प्रकाश मारवडकर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन श्री प्रियदर्शन हुकुमचन्द गहाणफरी एवं झण्डारोहण श्री अशोककुमार मोदी परिवार ने किया। संचालन पण्डित जितेन्द्रजी राठी, जयपुर ने किया।

शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर एवं मंगलायतन परिवार अलीगढ के लगभग 50 विद्वानों की टीम ने विभिन्न स्थानों पर करीब 1500 छात्र-छात्राओं को जैन सिद्धान्तों का ज्ञान कराया।

शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 10 जून को नागपुर में नवनिर्मित श्री वीतराग-विज्ञान भवन के कानजीस्वामी सभागार में श्री शिखरचन्दजी मोदी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभी विद्वत्गणों, शिविर प्रभारियों, प्रथम-द्वितीय-तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों एवं चित्रकला, शास्त्र सज्जा प्रतियोगिता के श्रेष्ठ प्रतियोगियों को श्री नरेशजी सिंघई के करकमलों से पुरस्कृत किया गया।

समारोह का संचालन शिविर संयोजक पण्डित प्रवेश शास्त्री करेली एवं पण्डित स्वप्निल शास्त्री नागपुर ने किया। **ह्र अशोक जैन**

बुन्देलखण्ड के 19 नगरों में सामूहिक शिविर ह्र

3. द्रोणगिरि (म.प्र.) : श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के सहयोग से दिनांक 19 से 27 मई, 2007 तक बुन्देलखण्ड के 19 विभिन्न नगरों में एक साथ विशाल धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर एवं अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा के कुल 32 विद्वानों ने बालकों में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण किया।

शिविर के दौरान बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाडा, पण्डित अनुरागजी शास्त्री, पण्डित विशेषजी शास्त्री एवं श्री सन्तोष जैन भगवां ने विविध नगरों में भ्रमणकर निरीक्षण किया तथा उचित मार्गदर्शन प्रदान किये।

समापन समारोह 27 मई को सिद्धायतन परिसर द्रोणगिरि में आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता ब्र. कैलाशचन्दजी अचल ने की। इस अवसर पर लगभग 550 शिविरार्थियों की उपस्थिति रही। पुरस्कार वितरण श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल, सागर के सहयोग से किया गया।

शिविर के संयोजक पण्डित अनुराग शास्त्री भगवां, पण्डित विशेष शास्त्री बड़ामलहरा एवं सह संयोजक श्री पंकज जैन द्रोणगिरि थे।

4. हिंगोली (महा.) : अ. भा. जैन युवा फैडरेशन हिंगोली द्वारा दिनांक 27 मई से 3 जून, 07 तक के.बी.एम. स्कूल में बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 27 मई को पंचायत समिति सदस्य श्री सुदर्शनजी कान्हेड ने किया। झण्डारोहण श्री यज्ञकुमारजी करेवार के करकमलों से सम्पन्न हुआ। शिविर एवं विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री फूलचन्दजी कंधी थे।

इस प्रसंग पर पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे के प्रवचनों तथा पण्डित अशोकजी मांगुलकर शास्त्री एवं पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद की कक्षाओं का लाभ मिला। बाल कक्षायें अन्य अनेक विद्वानों द्वारा ली गई। शिविर में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के भी दो प्रवचन हुये।

शिविर में 300 बालक एवं 250 प्रौढ साधर्मी लाभान्वित हुये। युवा फैडरेशन ने इस वर्ष

को छहढाला वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया ।

इस प्रसंग पर रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट ने सम्पन्न कराये। शिविर के सभी कार्यक्रम पण्डित अमोलजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

5. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट के तत्त्वावधान में साधना नगर स्थित श्री पंचबालयति जिनालय में जैनत्व बाल संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 6 से 13 मई, 07 तक किया गया।

प्रतिदिन विविध बाल कक्षाओं एवं प्रवचनों के माध्यम से श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 23 विद्वानों का अपूर्व लाभ मिला।

शिविर में 1000 से भी अधिक बालक-बालिकाओं ने लाभ लिया। 750 बच्चों द्वारा जैन धर्म संबंधी विविध चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। अन्तिम दिन छात्रों की परीक्षा हुई।

समापन समारोह की अध्यक्षता श्री मनोहरलालजी काला ने की तथा उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कार वितरण पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के करकमलों से प्रदान किया गया। समारोह का संचालन श्री विजयजी बड़जात्या व आभार प्रदर्शन श्री राजेशजी काला ने किया।

6. ओढ़ोव (अहमदाबाद-गुज.) : यहाँ चैतन्यधाम में स्व. श्रीमती वनिता बेन सोमचन्द रेवचन्द मेहता परिवार फतेपुर के सौजन्य से धर्मरत्न पण्डित श्री बाबूभाई मेहता अभिनन्दन स्मृति तत्त्वज्ञान प्रचार-प्रसार ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 27 अप्रैल से 4 मई, 07 तक बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री मणिबेन चिमनलाल दोशी मुम्बई के करकमलों से हुआ।

शिविर में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित दीपकभाई कोटडिया अहमदाबाद, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित सुरेन्द्रजी जैन उज्जैन, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित वैभव जैन, सुमित जैन, पण्डित अकलंक जैन मंगलायतन आदि विद्वानों द्वारा शिक्षण कक्षायें ली गई।

दिनांक 27 अप्रैल को ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में नवीन जिनमंदिर, वेदी शिलान्यास एवं शिखर शिलान्यास का कार्यक्रम सम्मेदशिखर विधान पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपके मार्मिक प्रवचन का लाभ भी समाज को मिला।

कार्यक्रम श्री अमृतभाई चुन्नीलाल मेहता के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

7. देवलाली : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के तत्त्वावधान में श्री दि. जैन मुमुक्षु समाज बृहन्मुम्बई के अन्तर्गत श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जबेरी बाजार द्वारा आयोजित नौवाँ आध्यात्मिक बाल शिविर दिनांक 22 से 29 अप्रैल, 07 तक सम्पन्न हुआ।

शिविर में पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित उदयमणीजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित मनीशजी शास्त्री बरेली, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री नासिक, पण्डित करणजी शाह बडौदा, पण्डित प्रकाशजी शास्त्री गोवर्धन, पण्डित सेजलजी शास्त्री सिंगोडी, ब्र. चेतनाबेन देवलाली, कु. ज्ञप्ति जैन देवलाली द्वारा विभिन्न कक्षायें लीं गई।

शिविर का उद्घाटन एवं झण्डारोहण श्रीमती उषाबेन प्रभुदासजी कामदार तथा श्रीमती भारतीबेन भायाणी के करकमलों से किया गया ।

ऐतिहासिक हुआ संस्कार शिक्षण शिविर ह्न

8. छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान विद्यापीठ के तत्त्वावधान में दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा दिनांक 20 मई से 27 मई, 2007 तक आयोजित 8 दिवसीय आध्यात्मिक बाल युवा संस्कार शिक्षण शिविर विभिन्न उपलब्धियों सहित ऐतिहासिक रूप से सम्पन्न हुआ।

छिन्दवाड़ा में प्रथम बार जैन सिद्धान्तों के बीजारोपण के उद्देश्य से **आवासीय** आध्यात्मिक बाल युवा शिक्षण शिविर में पूरे देश से 222 नन्हे-मुन्हे शिविरार्थी सम्मिलित हुये। शिविर में मुम्बई, कोलकाता, अहमदाबाद, कोटा, शिरपुर, औरंगाबाद, रामटेक, ललितपुर के साथ प्रदेश के भोपाल, इन्दौर, उज्जैन, देवास, खण्डवा, जबलपुर, विदिशा, सागर, रायसेन, सिवनी, कटनी सहित छिन्दवाड़ा जिले के सभी विधानसभा क्षेत्र के बालक-बालिकाओं ने उत्साह एवं उमंग के साथ हिस्सा लिया।

शिविर में प्रतिदिन प्रातः व्यायाम, योग, सामूहिक पूजन, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की कक्षायें, साहित्यिक गतिविधियाँ, जिनेन्द्र भक्ति, संस्कार रैली, मंगल प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। प्रतिदिन रात्रि में विभिन्न ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

शिविर का निर्देशन डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी ने किया तथा शिक्षण कक्षायें पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली द्वारा ली गयीं। **–दीपकराज जैन**

वैराग्य समाचार

जयपुर निवासी श्री कोमलचन्दजी गोधा का विगत माह शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप स्वाध्यायी एवं आत्मार्थी मुमुक्षु थे। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित विविध गतिविधियों से आप जीवन पर्यन्त जुड़े रहे।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो – यही भावना है।

सिद्धायतन रथ का प्रवर्तन

बांसवाड़ा (राज.) : तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि में दिनांक 5 फरवरी से 11 फरवरी, 2008 तक आयोजित होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रचार-प्रसार हेतु सिद्धायतन रथ का प्रवर्तन दिनांक 20 मई, 2007 को श्री महीपालजी ज्ञायक के करकमलों से हुआ।

बांसवाड़ा से प्रारंभ इस रथ ने पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाडा के नेतृत्व में पण्डित कमलेशजी शास्त्री बण्डा एवं श्री अरविन्दजी जैन के साथ राजस्थान के बागड, हाडौती, मेवाड अंचल के सेमारी, टोकर, उदयपुर, लाम्बाखोह, बेगू, बिजौलिया, भीण्डर, झालावाड, झालरापाटन, पिडावा, भीलवाडा, चित्तौडगढ, कानोड, कुरावड, कूण, मन्दसौर, जावरा, नीमच आदि स्थानों का भ्रमण किया। सभी जगह पूजन, प्रवचन एवं भक्ति के कार्यक्रम आयोजित हुये।

सर्वत्र समाज द्वारा रथ का भव्य स्वागत किया गया। इस दौरान पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं समन्तभद्र शिक्षण-संस्थान के सहयोग हेतु राशियों के अनेक वचन प्राप्त हुये। **ह्न मस्तांई प्रेमचन्द**

शिवपुरी में शिक्षण शिविर

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ ८ माह की अल्पावधि में ही निर्मित श्री शांतिनाथ जिनालय में २८ मई से ४ जून, ०७ तक के.के.पी.पी.एस. उज्जैन एवं युवा फैडरेशन भिण्ड के सहयोग से प्रथम बार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रवचन एवं कक्षायें पं. अतुल शास्त्री ध्रुवधाम एवं पं. अभिषेक जैन मंगलायतन ने ली। शिविर के मध्य पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा के ३ दिनों में ५ प्रवचनों का लाभ मिला।

(पृष्ठ-25 का शेष...)

आदि तिर्यंचों को भूख बहुत होती है; किन्तु बेचारों को पेट भर खाने को नहीं मिलता। घर-घर भटके, कितनी बार तिरस्कार होवे और कितनी बार डंडे की मार लगे, तब मुश्किल से रोटी का एकाध टुकड़ा कहीं मिले तो मिले; दुष्काल में घास-पानी के बिना गाय जैसे ढोर भूख से छटपटाते हों और उनकी आँखों से आँसू बह रहे हो, पास में उनका मालिक ग्वाला भी गाय के सहारे अपना शिर टेककर खड़ा हो और अपने भूखे ढोर की दशा देखकर उसकी आँखों से भी आँसू उमड़ रहे हों। इतना ही नहीं ढोर को रोगादि होते हैं, घाव में कीड़े पड़ जाते हैं, बहुत गरमी या ठंडी उन्हें सहन करनी पड़ती है; ऐसे अनेक प्रकार के दुःखों से वे अति पीड़ित होते हैं। अतः हे जीव ! यदि ऐसे दुःखों से भयभीत होकर तुम सुख को चाहते हो तो मुनिराज का यह उपदेश अंगीकार करके सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का सेवन करो और मिथ्यात्वादि को छोड़ो। ●

41 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

*** देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 800 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। * प्रातः 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 17 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। * शिविर में 39 विद्वानों का समाज को लाभ। * बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 145 एवं बाल कक्षाओं में 90 विद्यार्थी सम्मिलित। * शिविर में 60 हजार, 872 रुपयों का सत्साहित्य एवं 1190 घण्टों के सी.डी. व कैसिट्स बिके।**

देवलाली (नासिक-महा.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली द्वारा आयोजित 41 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनांक 8 से 25 मई, 07 तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन समारोह ह्न शिविर का उद्घाटन मंगलवार, दिनांक 8 मई, 2007 को श्री मुकुंदभाई खारा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। झण्डारोहण श्री प्रवीणभाई पोपटलाल वोरा, मुम्बई एवं शिविर का उद्घाटन श्री विपुलभाई हितेनभाई मोटाणी परिवार, मुम्बई ने किया।

उद्घाटन समारोह में श्रीमान मुकुन्दभाई खारा ने आगन्तुक विद्वद्गण एवं अतिथियों का स्वागत करते हुये पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली का परिचय दिया तथा शिविर का महत्त्व बताते हुए इसे तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बताया।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों का परिचय पं. पूनमचन्दजी छाबड़ा ने दिया।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने शिविरों के मूल प्रेरणास्रोत गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के योगदान का स्मरण करते हुये शिविर का परिचय एवं वर्तमान युग में उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। सभा का संचालन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री एवं आभार प्रदर्शन श्री सुमनभाई दोशी ने किया।

मुख्य प्रवचन ह्न प्रतिदिन प्रातः गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियाँधाना, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर एवं पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रातः 5 बजे प्रौढ़ कक्षा, दोपहर की व्याख्यानमाला एवं रात्रि के प्रथम प्रवचन में अनेक विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

विभिन्न कक्षायें ह्न नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, **गुणस्थान विवेचन** एवं **ज्ञानधारा कर्म धारा** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन, **द्रव्य संग्रह** की कक्षा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, **छहढाला** की कक्षा डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जयपुर एवं **लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका** की कक्षा पण्डित सुनीलजी जैनापुरे ने ली।

बालवर्ग की कक्षाओं का संचालन श्रीमती शुद्धात्मप्रभा टड़ैया के निर्देशन में हुआ;

जिसमें लगभग 90 छात्र सम्मिलित हुये।

विमोचन : प्रवचनसार (मूल), प्रवचनसार अनुशीलन भाग 2, छहढाला का सार, ज्ञानधारा-कर्मधारा, बुधजन सतसई, समाधि-साधना और सल्लेखना, जैन कलर बुक भाग 1 व 2, मुझमें भी एक दशानन रहता है आदि पुस्तकों का विमोचन गणमान्यों द्वारा किया गया।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन ह्न दिनांक 25 मई को प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मुख्यातिथ्य में प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्रकाशभाई हेक्कड मुम्बई एवं श्री शांतिभाई शाह उपस्थित थे। सम्मेलन में 15 प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन श्रीमती श्रुति गिड़िया खैरागढ़ एवं शाश्वत जैन शहडोल ने तथा आभार प्रदर्शन पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

दीक्षान्त एवं समापन समारोह ह्न दिनांक 25 मई को रात्रि में आयोजित दीक्षान्त एवं समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ. भारिल्ल ने की। मुख्यअतिथि श्री नरेशजी जैन नागपुर एवं सुमनभाई दोशी थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के दीक्षांत भाषण के पश्चात् पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि एवं पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा-परिणाम प्रस्तुत किया तथा डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया ने बाल कक्षाओं की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

बालबोध प्रशिक्षण में **प्रथम स्थान** कु. दीप्ति जैन खनियांधाना, **द्वितीय स्थान** शाश्वत जैन शहडोल एवं कु. परिणति जैन सोनगढ़ तथा **तृतीय स्थान** आगम जैन रांझी ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में **प्रथम स्थान** श्रीमती श्रुति-अभय जैन खैरागढ़, **द्वितीय स्थान** जयेश जैन उदयपुर एवं **तृतीय स्थान** तपिश जैन उदयपुर, राहुल जैन नौगाव व अनिल जैन खनियांधाना ने प्राप्त किया। सभी उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं ग्रन्थ भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

समारोह का कुशल संचालन पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

प्रशिक्षण शिविर अबाधित संचालित होते रहें, इस विचार से **प्रशिक्षण शिविर फण्ड** बनाने की घोषणा भी की गई; जिसमें अनेक लोगों ने अपने नाम लिखाये।

वेदी प्रतिष्ठा सानन्द सम्पन्न

खैरागढ़ (राजनांदगाँव-छ.ग.) : यहाँ स्थानीय दि. जैन मन्दिर में 23 अप्रैल,07 को वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन विदिशा, पण्डित विमलदादाजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर एवं स्थानीय विद्वान पण्डित अभयजी शास्त्री, पण्डित जिनेशजी जैन के साथ सोनगढ़ से पधारी ब्रह्मचारी बहनों का भी समागम प्राप्त हुआ। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनजी शास्त्री, खनियांधाना के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन

अब प्रात: 6.20 से 6.40 तक

इसकी सूचना मन्दिरजी में देवें और मित्रों को भी बता दें।

तमिलनाडू में धर्म प्रभावना

1. **चेन्नई :** यहाँ १२ से १४ मई तक आ. कुन्दकुन्द संस्कृति केन्द्र पौन्नूर हिल तथा चन्द्रप्रभ दि. जैन मंदिर कमेटी चेन्नई के तत्त्वावधान में धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में जम्बूकुमारजी शास्त्री, जयराजनजी शास्त्री, एलंगोवनजी शास्त्री एवं अशोकजी शास्त्री ने अध्यापन कार्य कराया। शिविर के आयोजन में मन्दिर के समस्त ट्रस्टीगण एवं तमिलनाडू के पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री श्रीपाल (सेवानिवृत्त आई.पी.एस.) ने सक्रिय भूमिका निभाई।

2. **तिरुमलै :** यहाँ श्री क्षेत्र अरहंतगिरि जैन मठ एवं आ. कुन्दकुन्द संस्कृति केन्द्र पौन्नूर हिल के तत्त्वावधान में तृतीय ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण-शिविर १६ से २० मई तक सम्पन्न हुआ।

श्री क्षेत्र के भट्टारक स्वस्ति श्री धवलकीर्ति स्वामीजी एवं मेलचित्तामूर जिनकांची मठ के स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन स्वामीजी ने ध्वजारोहण किया। उद्घाटन समारोह में श्वेताम्बर संत श्री कान्तिमुनि की उपस्थिति विशेष रही। शिविर में पं. जम्बूकुमारजी शास्त्री, पं. उमापति शास्त्री, पं. जयराजन शास्त्री, पं. नाभिराजन शास्त्री एवं श्रीमती विजयलक्ष्मी राजेन्द्रन ने शिक्षण कार्य कराया।

विद्वान व समाज ध्यान दें !

दसलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर की ओर से भेजे जानेवाले विद्वानों का निर्णय 5 अगस्त से 14 अगस्त, 07 तक जयपुर में लगनेवाले शिविर के समय ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री करेंगे; अत: इच्छुक समाज जल्दी से जल्दी निमंत्रण भेजें और विद्वान वर्ग भी अपनी स्वीकृति तत्काल भेजें। **ह्न डॉ. भारिल्ल**

वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध में...

हमारी मंगल भावना है कि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के पावन प्रयासों से भगवान महावीर का जो वीतरागी तत्त्वज्ञान आज हमें उपलब्ध है, उसके माध्यम से हम सब अपना कल्याण तो करें ही, साथ में उसे जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त प्रयास भी करें।

यद्यपि हम सब के प्रयासों से तैयार विद्वानों का एक बहुत बड़ा समुदाय आज हमें उपलब्ध है और उनके माध्यम से अनेक संस्थाओं द्वारा यह प्रयास हो ही रहा है; तथापि व्यर्थ के भ्रम न फैलें ह्न इस भावना से वर्तमान सन्दर्भ में हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हमारा किसी से भी वैर-विरोध नहीं है, जो भी व्यक्ति या संस्था वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न है, उसके प्रति हमारा प्रमोदभाव है। उन्हें हमारा अन्तर की गहराईयों से मंगल आशीर्वाद है। हम उन्हें प्रतिद्वन्दी के रूप में नहीं देखते, सहयोगी के रूप में देखते हैं। हम उनका सहयोग चाहते हैं और उन्हें पूरा-पूरा सहयोग देना चाहते हैं।

जो भी व्यक्ति या संस्था हमें सच्चे दिल से बुलाती रही है और बुलायेगी पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यों की मुख्यता प्रदान करते हुये हमें अनुकूलता होने पर उनके यहाँ बिना किसी भेदभाव के अवश्य जायेंगे।

न तो हम किसी से प्रतिबद्ध है और ना ही हमारा ऐसा संकल्प है कि हम वहाँ नहीं जायेंगे। उक्त सन्दर्भ में हम सदा से स्वयं ही निर्णय करते रहे हैं और भविष्य में भी ऐसा ही करेंगे।

आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी के उपस्थिति काल से आत्मकल्याण के साथ-साथ जगत् के हित के लिये जिनवाणी माँ की सेवा, स्वाध्याय, प्रवचन, लेखन और प्रकाशन के माध्यम से तत्त्वप्रचार के कार्य हम जिसप्रकार बिना दबाव के करते आ रहे हैं, उसीप्रकार आगे भी करते रहेंगे। इसीप्रकार वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये अबतक जिसप्रकार सामाजिक सम्पर्क करते आ रहे हैं आगे भी करते रहेंगे।

आज तक जो हमसे असहमत रहे, उनसे भी हमने विरोधभाव नहीं रखा और न भविष्य में रखेंगे। उनके प्रति माध्यस्थभाव धारण करेंगे। उन्हें जो कुछ करना है करें, हम उसमें उलझेंगे नहीं। उनके द्वारा हमारी असत् आलोचना किये जाने पर भी उनका प्रतिवाद करने के लिये न तो हमारे पास समय है और न हम उसमें शक्ति का अपव्यय करना चाहते हैं।

हमसे असहमत लोगों से भी हम अपेक्षा रखते हैं कि वे भी व्यर्थ के विवादों में न उलझें और चक्रवर्ती की सम्पदा से भी मूल्यवान जीवन के शेष समय का सदुपयोग आत्मकल्याण और वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में लगाकर सार्थक करें।

अधिक क्या कहें ! यह मनुष्य भव बार-बार नहीं मिलता। इसे यों ही न गवाँ दे।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

वीतराग-विज्ञान (जुलाई-मासिक) ● 24 जून 2007 ● वर्ष 25 ● अंक 12